समकालीन हिंदी उपन्यासों में नारी वर्ग से जुड़ा युगबोध

डॉ. रश्मी के. मलागी

'अस्मिता एक ऐसा शब्द है जो प्रत्येक व्यक्ति को अलग धरातल पर लाकर खड़ा का देता है | 'अस्मिता' का अर्थ परिवार व समाज में अपनी पहचान से है | सामाजिक सीमाओं में बद्ध है | सुरेशचन्द्र गुप्त लिखते हैं, 'अस्मिता को परिभाषित करना कठिन है, फिर भी 'मैं हूँ' से लेकर 'मैं किसलिए हूँ' तककि अंतर्यात्रा कई पड़ावों से होकर अंततः अस्मिता के गंतव्य तक पहुंचकर ही परी होती है |"[1] दूसरे शब्दों में कहे तो, "कई पगडंडियों में बंटे विश्व पथ में दिशा भ्रम से बचकर अपने लिए उपयुक्त मार्ग का सतर्क संधान कर लेना ही समिता है "[2] इस प्रकार 'अस्मिता' स्वयं को दूसरों से पृथक करके स्थापित करने की धारणा है |

'अस्मिता' के साथ नारी शब्द जुड़ जाने से 'नारी अस्मिता' बन जाता है जोएक बहुत ही प्राचीन धारणा है, जो धीरे-धीरे प्रचंड रूप ग्रहण करती जा रही है | इस तरह पुरातन से नारी अस्मिता विषयक सोच चली आ रही है, लेकिन सन् १९८० के बाद हिंदी साहित्य में दाखिल हुए विविध विमर्शों में नारी विमर्श भी एक ऐसा विमर्श रहा है जिसने पूरे समाज में नारी को केंद्र में एक धुरी के रूप में स्थापित किया है | इस सोच को विभिन्न लेखिकाओं ने अपने-अपने माध्यम से बाँटने का प्रयास किया है | प्रत्येक रचनाकार का अपना एक दृष्टिकोण होता है | वही दृष्टिकोण उसकी रचना में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से झलकता है | मृदुला गर्ग ने स्त्री को केंद्र में रखकर अपने साहित्य का सृजन किया है | उनकी नारी विषयक सोच नारी को हाशिए से केंद्र में लाकर समाज में स्थापित करने का एक सफल प्रयास माना जा सकता है | इन्होने अपने कथा-साहित्य के माध्यम से स्त्री को बोल्ड रूप में रेखांकित किया है | ज्यादातर लेखिकाएँ इस बोल्डनेस शब्द को रेखांकित कर पाने में सक्षम नहीं होतीं, लेकिन मृदुला गर्ग ने स्त्री को इस बोलडनेस का प्रत्यक्ष सामना करते दिखाया है | 'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास में मृदुला गर्ग ने मनीषा नामक स्त्री पात्र के माध्यम से आत्मनिर्भर स्त्री को चित्रित किया है जो अपने भीतर इतनी शक्ति समाहित किये हुए है कि बिना किसी डरके वे अपने मन की बात सबके सामने रख पाती है | वहीं दूसरी ओर'चित्तकोबरा' उपन्यास में मनु नामक स्त्री पात्र के माध्यम से एक ऐसी नारी की छवि को दिखाने का प्रयास किया है, जो कि बिना समाज के डर और बंधनों से स्वयं को आज़ाद करती हुई पति व प्रेमी दोनों के साथ अपनी ज़िन्दगी व्यतीत करती है | 'कठगुलाब' उपन्यास की पृष्ठभूमि भारत एवं अमेरिका की होती है | इस उपन्यास के नारी पात्र स्मिता, मारियान, असीमा, नमिता, गंगा, नीरजा आदि अपने-अपने

हालतों से जूझते हुए अपनी अस्मिता को स्थापित करने का प्रयास करती है | “मैं कितने दिन तुझे घर में रखूंगी | मर्दों का कोई भरोसा नहीं होता | तू अपने घर चली जायेगी, तभी मुझे शांति मिलेगी |”[3]इस प्रकार नारी विकट स्थितियों में भी अपने लिए नई ज़मीन तलाशती है |

मृदुला गर्ग के कथा-साहित्य में उपन्यास विधा की भांति कहानी में भी कहानी विधा में भी मुख्य रूप से नारी सशक्तिकरण के विषय को उद्घाटित किया गया है | उनकी कहानियों में अनुभूतियाँ, संवेदनाएँ, नारी जीवन की त्रासदीपूर्ण स्थिति व भोगा हुआ यथार्थ मुख्य रूप से परिलक्षित होता है | आठवें दशक से लेकर अब तक आठ कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें नारी को स्वयं निर्णय लेने तथा नई भूमिका की परिपाटी पर चित्रित किया गया है | लेखिका सोचती है कि भले ही नारी अपने परिवार, समाज के साथ जुड़ी हुई है, लेकिन इस जुड़ाव के बावजूद उसकी अपनी भी पहचान है, जिसपहचान को उसे धुंधला नहीं होने देना चाहिए क्योंकि यही पहचान नारी का सबसे बड़ा हथियार है |

नासिरा शर्मा हिंदी साहित्य की सशक्त लेखिका हैं | इन्होंने कई रचनाएँ हिंदी साहित्य को भेंट कीं| नासिरा शर्मा के साहित्य में नारी पात्र अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हैं | इन्होंने नारी की स्वतंत्रता को लेकर लिखा हैं- “वे आधुनिकता के नाम पर स्त्री स्वच्छंदता की पक्षधर नहीं है | वे हर हाल में विवाह, परिवार को बनाए रखने में विश्वास रखती है, अगर एक बार ये आधार खंडित हो गए तो कई पीढ़ी फैशन के नाम पर अनके विकृतियाँ और असाध्य रोगों की शिकार हो जाएँगी जिसका प्रभाव समाज पर दूरगामी रूप में स्वस्थ नहीं होगा |”[4]इसलिए उनके नारी पात्र आधुनिक होते हुए भी उच्चश्रंखल नहीं है | इस बात को ‘शामली’ उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने रेखांकित करने का प्रयास किया है | शाल्मली पढ़-लिखकर उच्च अधिकारी बन जाती है, किन्तु इसके बाद भी उसके जीवन का संघर्ष समाप्त नहीं होता | विवाह के पश्चात पति से उसका द्वंद्व चलता है | उसका पति पुरुष-प्रधान सोच का होने के कारण सदैव उसे दबाने का प्रयास करता है | वह कहता है कि “तुम जानना चाहोगी पुरुष की दृष्टि में और क्या है ? भोगने की वस्तु... वही उसकी पहचान है | इसलिए तुम औरत की तरह रहो | इसी में तुम्हारा उद्धार है और घर का कल्याण व गृहस्ती का सुख |”[5]इस प्रकार उपन्यास की नायिका संघर्ष करती है | एक ओर तो वह मुक्त होना चाहती है तथा दूसरी ओर वह अपने संस्कारों में बंधी हुई है |

इसी तरह ‘ठीकरे की मंगनी’ उपन्यास की नायिका पुरानी परम्पराओं के खिलाफ आवाज़ उठाती है | उपन्यासमें वह औरतों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करती है और ज़िन्दगी में आगे बढ़ने का

सन्देश देती है | नासिर शर्मा की कहानियों मे भी ऐसी नारी पात्र है, जो अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हैं और अपने अधिकारों को पाने के लिए प्रयत्नशील हैं | उन्होंने अपनी रचनाओं में पीड़ा झेलती, बेबस नारियों के प्रति गहन ममत्व भाव को प्रकट किया है | वह चाहती हैं कि नारी और पुरुष दोनों ही बिना किसी कटुता के प्रेमपूर्वक अपना जीवन यापन करें | उनके उपन्यास उनकी इसी सोच का प्रतिनिधित्व करते हैं |

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में महिला लेखिकाओं में नारी अस्मिता की स्थापना को लेकर एक सशक्त दिशा व दृष्टि का माध्यम बनकर उभरी लेखिका प्रभा खेतान का नाम अग्रणीय रूप से चर्चा का विषय बना रहा | उनका प्रथम उपन्यास 'आओ पेपे घर चले' प्रभा के अपने व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों पर आधारित है | इस उपन्यास में अमेरिकी स्त्री के जीवन में एकाकीपन की त्रासदी को आधार बनाया गया है | वहदेशमें अकेलेपन से जूझती हुई कहती है,"दुनिया में ऐसा कोई कोना बताओं जहाँ औरत के आँसू नहीं गिरे |"[6] आर्थिक स्वतंत्रता को जीने की शर्त मानकर आइलिनदो पतियों और पांच प्रेमियों के होते हुए भी कुत्ते 'पेपे' को अपने जीवन का सहारा मानती है | लेखिका ने नारी जीवन के क्षणों को संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है |

प्रभा खेतान का सर्वाधिक चर्चित उपन्यास है'छिन्नमस्ता' | इस उपन्यास की नायिका अपने जीवन का रास्ता स्वयं चुनकर अपने अस्तित्व का निर्माण करती है | वहकहती है कि "अपने पैरों पर खड़ी स्त्री का कोई निरादर नहीं कर सकता |"[7] वह अपना अस्तित्व कायम रखती है और छिन्नमस्ता बनकर अपना मार्ग स्वयं चुनती है | बंधे-बंधाए सामाजिक दर्दे से हटकर जीवन के लिए नए प्रतिमान गढ़ने का प्रयास करती है | इस तरह प्रभा खेतान ने अपने उपन्यास की नायिकाओं के अस्तित्व को स्थापित करने का प्रयास किया है | उनके उपन्यासों की नारियाँ टूटकर बिखरती नहीं बल्कि हर परिस्थिति का डटकर सामना करती है | अपने'स्व' का स्थापन ही उनका परम लक्ष्य है |

इसके साथ ही मैत्रेयी पुष्पा नारी सशक्तिकरण व अस्मिता के प्रत्येक पहलू को अपने साहित्य में उजागर करती है | स्त्री की स्थिति को समाज व पुरुष- प्रधान मानसिकता के आधार पर अपने उपन्यासों व कहानियों में चित्रित करती है | मैत्रेयी पुष्पा जी ने स्वयं के जीवन में भी इन्हीं परिस्थितियों कोभोगा है | एक ग्रामीण पृष्ठभूमि से उठकर वे स्वयं की नारी अस्मिता को नई दिशा की ओर स्थापित

करती हैं| मैत्रेयी पुष्पा का साहित्य इस बात का उल्लेख करता है कि नारी की अन्तश्चेतना जागरूक और विरोधीतत्वों के खिलाफ सक्षम हो गई है |

मैत्रेयी पुष्पा ने नारी अस्मिता को प्रतिष्ठित करने का सफल प्रयास किया है | 'इदन्नमम' उपन्यास में स्वतंत्र नारी अस्मिता व उसके सशक्तिकरण कीठोस ज़मीन तैयार की है | इस उपन्यास की नायिका मंदाकिनी तथा अन्य स्त्री पात्रों में विद्रोह चेतना का स्वर मुखरित होता है | 'चाक' उपन्यास की नायिका सारंग इसी प्रकार नारी अस्मिता के नए प्रतिमान स्थापित करती है | विवाह के पश्चात् ग्रामीण पृष्ठिभूमि पर पले-बड़े पति की अहंवादी प्रवृति से वह आहत है | लेखिका का एक अन्य बहुचर्चित उपन्यास 'अलमा कबूतरी' एक जाति कबूतरा की जीवन व्यथा का व्याख्यान है | इस उपन्यास में नारी अस्मिता के साथ सामाजिक स्थिति और भ्रष्टाचार की व्यवस्था का बखान किया गया है | अल्मा कबूतरी को दलित व नारी चेतना और अस्मिता के आधार पर परखा है |

संक्षेप में कह सकते हैं कि नारी अस्मिता को नई दिशा देने का प्रयास मैत्रेयी पुष्पा जी ने अपने कथा-साहित्य के माध्यम से किया है | उनके उपन्यास नारी को वर्तमान समय की परिधि पर लाकर खड़ा करते है तथा समाज में अपनी सम्पूर्ण गरिमा के साथ जीने के लिए प्रेरित करते है |

समकालीन लेखिकाओं में सुनीता जैन का नाम भी उल्लेखनीय है | सुनीताजैन के साहित्य में नारी विषयक सोच का प्रदुभार्व दिखाई देता है | इन्होनें अपने कथा-साहित्य के माध्यम से नारी की स्वतन्त्रता व् अस्मिता को भारतीय सांस्कृतिकपरिवेश के अनुसार रेखांकित किया है | लेखिका ने अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी चिंता, चेतना व अस्मिता की विचारधारा को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है |

प्रत्येक नारी स्वयं की अस्मिता को कायम रखने का प्रयास करती है|वहइस प्रकार के कार्य करती है, जिससे उसकी पहचान पर कोई भी किसी तरह का प्रश्न न खड़ा कर सके | सुनीता जैन का 'बिंदु' उपन्यास भी एक ऐसी नारी का चित्रण करता है, जो समाज के साथ संघर्ष करती दिखाई देती है | भले ही कहीं-न-कहीं रुढ़िग्रस्त है, लेकिन वह स्वयं का अस्तित्व तलाशती है | 'मरणातीत' में नायिका भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है, जो मर्यादा को तोड़ नहीं पाती और अपने परिवार से बंधे रहना चाहती है| इस प्रकार सुनीता जैन ने अपने उपन्यास के माध्यम से विभिन्न नारी पात्रों को जहाँ पारस्परिक प्रतिष्ठित

किया है, वहीं आधुनिक जीवन शैली को अपनाते हुए नारी अस्मिता को अपने रचना संसार में व्याप्त नायिकाओं को स्वतंत्र होकर अपने अस्तित्व का निर्माण करते दिखाया है |

वहीं मैत्रेयी पुष्पा का कथा-साहित्य संक्षेप में नारी शोषण के विरोध व नारी अस्मिता विषयक सोच के पक्ष में हामी भरता हुआ विदित होता है | अन्य लेखिकाओं की भांति सुनीता जैन ने अपने कथा-साहित्य के माध्यम से नारी की स्थिति का चित्रांकन किया है | सुनीता जैन का सम्पूर्ण कथा-साहित्य नारी को भारतीय संस्कृति की पारम्परिक मर्यादाशील परिधिमें केन्द्रित रहा है |

उपन्यास आधुनिक युग की उपज है | इसे आधुनिक युग की नई एवं सशक्त विधा के रूप में देखा गया है | परिवर्तन और गतिशीलता संसार के नियम हैं | हिंदी उपन्यासों ने इन सारे परिवर्तनों के बदलाव को प्रतिबिंबित किया है | उपन्यास का कैनवास बहुत विस्तृत होने के कारण उसमें एक प्रमुख कथा के साथ-साथ अनेक सहायक कथाएँ भी आती हैं | इसी कारण अनेक सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक आदि छोटी-मोटी अनेक समस्याओं को रेखांकित किया जा सकता है | आधुनिक युग की बुराइयां इन लेखिकाओं की दूर दृष्टि से छूटी नहीं है | विघटित होते हुए परिवारों से होकर गृहस्थ एवं सामाजिक जीवन की तपन व्यक्त होती है | नई पीढ़ी की उच्चशृंखलाता उनसे अछूत नहीं रही | भारतीय समाज के रूढ़िग्रस्त सांस्कृतिक बन्धनों से छुटकारे की ललक उनमें है | उनके पात्र अपना अस्तित्व बनाना चाहते हैं| नारी का एकाकी जीवन, दाम्पत्य जीवन, कुँवारा जीवन, वैधव्य जीवन आदि सभी पर लेखिकाओं की सूक्ष्म एवं तीखी दृष्टि है और वे इन विसंगतियों को जुझारूता से प्रस्तुत कर रही हैं |

स्वातंत्र्योतर महिला लेखिकाओं में कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, मालती जोशी, शिवानी, शशिप्रभा, कांता भारती, मेहरुन्निसा परवेज़, राजी सेठ, ममता कालिया, मृदुला गर्ग आदि महत्वपूर्ण हस्ताक्षरकारों के रूप में हमारे सम्मुख उपस्थित होती हैं | इन महिला लेखिकाओं ने हिंदी गद्य खासकर उपन्यास साहित्य में अपनी अलग पहचान बनाई है|

महिला उपन्यासकारों की औपन्यासिक रचनाओं का व्यापक अध्ययन करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि इन रचनाओं में चेतना की विविध रूप परिलक्षित होते हैं | युगव समाजजीवन से संबंधित औपन्यासिक रचनाओं में प्रतिबिंबित होने के कारण युग और समाज के परिवर्तन के साथ ही चेतना में भी परिवर्तित प्रक्रिया से गुज़रा है | चेतना के विविध रूपों के कारण ही

सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक आदि अनेक रूपों को महिला लेखिकाओं ने अपनी औपन्यासिक कृतियों में सशक्तताके साथ अभिव्यंजित किया है | युगीन आवश्यकतानुसार पूर्व स्थापित जीवन मूल्यों का पुनर्मूल्यांकन कर उन्हें नवनिर्माण की ओर क्रियान्वित किया है |

चेतना एक अनवरत प्रक्रिया है जो मनुष्य, समाज और समय से कभी भी अलग नहीं की जा सकती | इस दृष्टि से चेतना मानव अस्तित्व के सहज रूप स्वरूप के उद्घाटन में सहायक है | चेतना साहित्य का एक मूल तत्व है | यही तत्व साहित्यकार की पूर्वानुभूति को हर नये अनुभव के साथ संश्लिष्ट कराते हुए, एक समय सापेक्ष नवीन व्यवस्थापन को जन्म देता है | चेतना का स्वरूप समग्र रूप में होता है| इस समय रूप से भरी हुई चेतना का महिला लेखिकाओं ने विविध रूप से चित्रित किया है |

आधुनिक काल अपनी विशिष्ट स्थितियों के कारण पिछले कालों से अनेक दृष्टियों से भिन्न है | पिछले युगों की धर्म चेतना या अध्यात्म चेतना समकालीन जीवन में नहीं दिखाई देती हैं | आधुनिक काल भौतिकवादी है | वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण इस काल में तार्किकता को अधिक महत्त्व है | इस कारण आधुनिक काल में समस्त मूल्यों का निर्माण भी तार्किकता के आधार पर होता दिखाई देता है | धर्मका स्थान आज अर्थ ने लिया है | भावुकता के स्थान पर आज बौद्धिकता अधिक मात्रा में दिखाई देती है |

आधुनिक काल की वैज्ञानिक प्रगति ने विविध परिवर्तन किए हैं | इन घटनाओं से भारतीय समाज में विविध परिवर्तन दृष्टिकोण होते है | इस सामाजिक चेतना को महिला लेखिकाओं ने अपनी लेखनी में काफी प्रभावित रूप से अंकित किया है | महिला लेखिकाओं ने यह एहसास किया है कि महिलाओं के लिए समाज में जीने की एक निश्चित नियमावाली है, जिसका उल्लंघन करने वाली नारी सामाजिक रूप से प्रताड़ित और पीड़ित की जाती है | लेखिकाओं ने सामन्तवादी बर्बरताओं से कराहती नारी के रूदनको आत्मीयता के आधार पर समझा है | उन्होंने इस बात को आत्मीयता से भी अनुभव किया है कि अब नारी विद्रोहिणी बनकर पुरुष के अहम को चुनौती दे रही है, इस चेतना को महिला उपन्यासकारों ने बड़ी मार्मिकता से अभिव्यक्त किया है |

आधुनिक समाज अपनी विशेष उपलब्धियों के बावजूद जटिल हो गया | विशेषत: मध्यवर्गीय लोग जीवन यापन की जटिलताओं से मुठभेड़ करते हुए यांत्रिक से बन गए हैं| धन संचय, सामाजिक पद प्रतिष्ठा की होड़, आर्थिकविवशताएँ, कटुता एवं पीड़ा भाव आदि यातनाओं को महिला लेखिकाओं ने समझा और उन्हें अपनी औपन्यासिक कृतियोंमें स्थान दिया है | इन सभी चेतनाओं को समझकर उनको बौधिक स्तर पर अभिव्यक्त किया है |

समाज के विविध रूपों के आधार पर सामाजिक चेतना का प्रभावी अंकन लेखिकाओं की रचनाओं में हुआ है | इस सामाजिक चेतना का बहुपक्षीय चित्रण इनकी कृतियों में मिलता है | ये लेखिकाएँ मुख्यतः गहनता के साथ इस चेतना का साक्षात्कार करती हैं कि शिक्षा प्रसार, संवैधानिक समानाधिकार एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता के बावजूद नारी अपना संपूर्ण व्यक्तित्व‘स्वतंत्र इकाई’ के रूप में पुरुष प्रधान समाज में निर्मित नहीं कर पा रही है | उसकी पहचान का कोई मूल्य नहीं है | वह अब भी आश्रित है | अब भी वह किसी की माँ, बेटी और बहन के रूप में ही जानी जाती है | उसका अपना निजी अस्तित्व कुछ भी नहीं | संक्षेपमें हम कह सकते हैं कि महिला लेखिकाओं ने अपनी आँखों से सामाजिक परिवेश, पारिवारिक घुटन, जातिवादिता, असमानता, शोषण एवं भ्रष्ट प्रशासन को देखकर अपनी सामाजिक चेतना को गहनता के साथ उजागर किया है |

सामाजिक चेतना के साथ ही साथ राजनैतिक चेतना का चित्रण भी महिला लेखिकाओं ने प्रभावी रूप में दिया है | महात्मा गांधी के नेतृत्व से लेकर इंद्रा गांधी के नेतृत्व तक के राजनीतिक सन्दर्भ इनकी औपन्यासिक कृतियों में खंड-खंड रूप में क्यों न हों, प्राप्त होते हैं| राजनीतिक दलों के विविध रूपों का यथार्थ दर्शन भी इन औपन्यासिक कृतियों में प्राप्त होता है | राजनैतिक दलों के सत्य रूप को भी महिला लेखिकाओं ने स्पष्ट किया है| यह मंत्री बाहरी रूप से अपनी जाति के हितैषी बनते हैं, किन्तु आतंरिक रूप से उसकी उपेक्षा करते हैं| पुलिस अधिकारियों पर भी मंत्रियों का दबाव बना हुआ है | पुलिस इनके संकेतों पर ही नाचती है | आज का कोई भी दल प्रजा की दृष्टि से अधिक्ल चिंतित नहीं है | राजनीतिक दलों के खोखलेपण को महिला लेखिकाओं ने उजागर किया है | वर्तमान राजनीति वायदों व फायदों में ही व्यक्त है | राजनीति की अर्थहीनता एवं भ्रष्ट राजनीतिज्ञों के विरुद्ध भी लेखनी चलने का कार्य महिला लेखिकाओं ने किया है | वर्तमान राजनीति के सम्बन्ध में अनेक महिला लेखिकाओं ने कहा है कि राजनीति तो एक कला है, जो एक ओर राजनीतिज्ञों के अवगुणों को छिपाती है तो दूसरी ओर उसपर

किये गए घातों-प्रतिघातों से उसकी रक्षा करती है | राजनीतिज्ञों के चुनाव के पूर्व के आश्वासन एवं पद-प्राप्ति के पश्चात् के कार्यों में दूरगामी अंतर दिखाई देता है | भ्रष्टराजनीति एवं दलों के दलदलों के संदर्भ में भी लेखिकाओं की चेतना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है | आज की राजनीति अपराधोमुखहोती जा रही है | महिला लेखिकाओं के राजनीतिक चेतना को देखने के बाद यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि राजनीति का व्यापक चित्रण करने में महिला लेखिकाओं को बहुत अधिक मात्रा में सफलता प्राप्त हुई है |

महिला उपन्यास लेखिकाओं ने अपनी औपन्यासिक कृतियों में पंडापुरोहित एवं साधु-संतों के जीवन को भी यथातथ्य रूप में प्रस्तुत किया है | इन लेखिकाओं का यह स्पष्ट कहना है कि आज इनके कार्य पुनीत नहीं दिखाई देते है | आर्थिक लाभ उठाने वाले इनके कार्य है | भक्तों व यजमानों को ठगने के लिए आज नए-नए हथकंडों को अपनाते हैं| इनका कार्य देखकर यह कहा जा सकता है कि यह आज धर्म के नाम पर बहुत बड़ा कलंक है | महिला लेखिकाओं ने धार्मिक चेतना के अंतर्गत सामाजिक विषमता का भी चित्रण किया है | एक ओर वैज्ञानिक प्रगति के कारण समाज में धार्मिक भावनाओं के सम्बन्ध में परिवर्तन भी आया है तो दूसरी ओर समाज का एक वर्ग ऐसा भी है जो धार्मिक भ्रांत धारणाओं में ग्रस्त है| समाजमें दिखाई देनेवाली धर्मभीरुता एवंभाग्यवादिता की प्रवृतियों का विवेचन भी अनेक लेखिकाओं ने अपनी औपन्यासिक कृतियों में किया है | महिला लेखिकाओं ने इस सन्दर्भ में अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता की भावना के आधार पर यह स्पष्ट कहा है कि छुआछूत तथा जाति-पाति सम्बन्धी भेदभाव फैलाने वालों पर प्रशासनिक कार्यवाही की जाएगी | इस सन्दर्भ में अनेक लेखिकाओं ने यह भी स्पष्ट रूप से कहा है कि व्यक्ति जन्म से नहीं कर्म से महान होता है; या व्यक्ति जन्म से नहीं कर्म से नीच होता है | धर्म के नाम पर समाज में यही कहा है कि जब तक धार्मिक अन्धविश्वास एवं रूढ़ियाँ समाप्त नहीं होतीं, तब तक न व्यक्ति का उद्धार हो सकता है, न देश का विकास ही | संक्षेपमें हम कह सकते हैं कि धार्मिक चेतना को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में महिला लेखिकाओं ने बखूबी उजागर किया है |

मनुष्य की श्रेष्ठ नीतियों एवं साधनाएँ ही संस्कृति होती है | इस संस्कृति के अनेक रूपों का चित्रण महिला लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में किया है | धर्म एवं संस्कृति को आत्मसात करने की प्रवृति महिलाओं में विशेष रूप से होती है | यही कारण है कि महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में भारतीय संस्कृति के तत्व विशेष रूप से द्रष्टव हैं | महिला लेखिकाओं ने पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण भारतीय संस्कृति में आई अनेक विकृतियों का भी विवेचन किया है | कुछ रचनाओं में पाप-पुण्य की

वितस्ता 2021

व्याख्या भी परिस्थिति के अनुरूप की है | मेहरुन्निसा परवेज़ यहाँ तक कहती हैं कि जो मन को प्रिय लगे वहपुण्य है, जो अप्रिय लगे वह पाप है | कुछ रचनाओं में गीता के कर्मवाद की भी व्याख्या की है | सांस्कृतिक चेतना के अंतर्गत आलोच्य उपन्यासों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अनेक महिला उपन्यासकारों ने भारतीय संस्कृति की दिव्यता एवं भव्यता को चित्रित किया है | महिला उपन्यास लेखिकाओं ने ब्रह्मा को सत्य एवं जगत को मिथ्या माना है | इन लेखिकाओं ने गार्हस्थ्य जीवन वैराग्य जीवन से उत्कृष्ट होता है, यह बात भी अनेक पात्रों के आधार पर बताई है क्योंकि गार्हस्थ्य जीवन अनेक संकल्पों को साकार करनेवाला है | अनेक रचनाओं में भावात्मक एकता का चित्रण भी किया गया है |

भारत जैसे बहुभाषी एवं बहुधर्मी देश के लिए भावात्मक एकता का चित्रण भी किया है | यह प्रसन्नता की बात है कि अनेक महिला लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में भावात्मक एकता को परिपुष्ट किया है | जीवन के प्रति आस्थावादी दृष्टिकोण को भी अंकित करने का कार्य आलोच्य उपन्यासों ने किया है | महिला उपन्यास लेखिकाओं ने नैतिक चेतना के विविध रूपों को भी चित्रित किया है | आज भारतीय समाज में भ्रष्टाचार के कारण नैतिकता के मानदंड पूरी तरह से परिवर्तित हो गए हैं | इस कारण इन लेखिकाओं ने नष्ट होती नैतिक चेतना के अनेक उदाहरण अपनी औपन्यासिक कृतियों में प्रस्तुत किए हैं | जिस प्रकार गुलाम को गुलामी में ही आनन्द आने लगता है, उसी प्रकार ऐसी स्त्रियाँ अपनी दस्ता को ही सुख व सुरक्षा मानती हैं |

ऐसी स्त्रियाँ, जो मुक्ति से अवगत तो हैं, मुक्त होना भी चाहती हैं लेकिन इच्छा शक्ति की कमी के कारण वे परिवार की इज्ज़त, तथाकथित स्त्रीत्व मर्यादा, सन्तान की ममता के चक्रव्यूह और समाज व धर्म के भय के दायरे से बाहर नहीं निकल पातीं | वे घरेलू हिंसा, प्रताड़नव अपमान को दम साधकर दुखी मन से सहती रहती हैं, पर उसके विरुद्ध विद्रोह नहीं कर पातीं| सामाजिक बदनामी या निंदा, धार्मिक वर्जनाओं व अंधविश्वासों का डर तो उनमें व्याप्त होता ही है, साथ ही परिवार और पति पर पूरी तरह आर्थिक निर्भरता भी उनकी इस दुविधा और दुर्गति का एक बड़ा कारण होता है | इस श्रेणी में वे मध्यवर्गीय कामकाजी महिलाएं आती हैं, जो कामकाजी होने के कारण स्वावलम्बी होती हैं | मुक्ति की इच्छा और अस्मिता का अहसास उन्हें कचोटता है | वे अपना आत्मसम्मान निर्मित कर चुकी होती हैं | चूँकि वे परिवार का दायरा तोड़कर कामकाजी महिलाएं बनी होती हैं | परिवार के अतिरिक्त आमदनी का ज़रिया बन जाने के चलते, वे परिवार में विशेष रुत्बा भी पा जाती हैं | दरअसल ये स्त्रियाँ एक तरफ अपने

धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक दबाव में होती हैं तो दूसरी तरफ औरत होने की अपनी हीन-ग्रंथि से वे इतनी त्रस्त होती हैं कि उनमें आत्मविश्वास की कमी दिखाई देती है |

हमारे देश में साधारणतया कई दृष्टिकोणों से स्त्री सशक्तिकरण की अवधारणा तोली जाती है | ऐसे तो मुक्ति की तरह ही स्त्री मुक्ति की भी कई अवधारणाएं हो सकती हैं, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी मुक्ति की अलग अवधारणा रख सकता है | सापेक्षित सिद्धांत के अंतर्गत मुक्ति को लेकर सबके अपने-अपने सपने हो सकते हैं | राजनीति या समाज के सामाजिक, आर्थिक या सांस्कृतिक क्षेत्रों में स्त्री ने प्रवेश करके यह सिद्ध कर दिया है कि वह अपने सपनों को सिद्ध करने में सक्षम है | भले ऐसी स्त्रियों की संख्या कम है, किन्तु वे समाज को एक आदर्श पथ दिखाकर प्रेरणा की स्रोत बनती है |

यदि मनुष्य महत्वाकांक्षी न हो तो वह मुर्दा कहलाता है और जो कौम सपने न देखे, वह भी मुर्दा ही होती हैं | स्त्रियाँ भी सपने देखती हैं | यह भी एक हकीकत है कि पुरुषों के समान ही स्त्रियाँ भी महत्वाकांक्षी होती हैं | वे भी सत्ता हासिल करना चाहती हैं- माध्यम चाहे समाज सेवा हो, बिजनेस, बाज़ार या राजनीति अथवा सांस्कृतिक मंच साहित्य या फिर खुद अपना ही घर हो |

सन्दर्भ

1. दर्शन पाण्डेय, नारी अस्मिता की परख, पृ. 2
2. मृदुला गर्ग, चित्त कोबरा, पृ. 16
3. वही, पृ. 13
4. मृदुला गर्ग, कठगुलाब पृ. 14
5. नासिर शर्मा, शाल्मली, पृ. 16
6. नासिर शर्मा, ठीकरे की मंगनी, पृ. 118
7. प्रभा खेतान, आओ पेपे घर चले, पृ. 34